एकाग्रता की शक्ति से आएगा संतुलन जीवन में : विधान सभा अध्यक्ष कँवर पाल

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत),२७ मई २०१७ । आज ज्ञान सरोवर स्थित हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ की भगिनी संस्था ,वैज्ञानिक और अभियंता प्रभाग के संयुक्त तत्वावधान में एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मलेन का मुख्य विषय था -"जीवन और कर्म में संतुलन " .इस सम्मलेन में बड़ी संख्या में प्रतिनिधिओं ने भाग लिया . दीप प्रज्वलित करके इस सम्मेलन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ.

आज के कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए ठाणे सब जोन की संचालिका **राजयोगिनी गोदावरी दीदी** ने अपना आशीर्वचन इन शब्दों में दिया। आपने कहा की परमात्मा शिव ऐसा बताते हैं की मनुष्यों के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। अपनी दृढ़ता के आधार पर वह कुछ भी कर सकता है। अपने कर्मों को आध्यात्मिकता का पुट देकर जीवन से उसका संतुलन कायम किया जा सकता है। हम सभी अपना नियत कार्य करते हुए भी मन से ईश्वर का स्मरण कर सकते हैं। ईष्वरीय स्मृति में किया गया कार्य उत्तम होने के कारण जीवन में संतुलन लाता है। योगाभ्यास से एकाग्रता आती है और इस शक्ति से कर्म और जीवन का संतुलन कायम रहता है।

हरयाणा विधान सभा के अध्यक्ष कँवर पाल जी ने उद्घाटन कर्ता की हैसियत से कहा की जीवन में संतुलन अनिवार्य है। मगर आम तौर पर हमारा जीवन एकांगी हो जाता है। हम सभी किसी एक ही दिशा में बढ़ जाते हैं। काम पर काम किये जाते हैं और परिवार पीछे छूट जाता है। ऐसा ठीक नहीं है। खेतों में जरूरत से अधिक खाद का प्रयोग करके हमने फसल तो प्राप्त कर लेते हैं काफी - मगर आज हमारी भूमि बंजर हो जाती है। संतुलन रखना चाहिए था जो नहीं हुआ। सितार के तार को भी सनतुलन में कसने पर ही ध्वनि आएगी। संतुलन के लिए ईश्वर की शरण चाहिए। आत्मा को समझना होगा। एकाग्रता लानी होगी। अपने व्यक्तिगत जीवन को संतुलित करके ही हम किसी को भी प्रेरणा दे सकेंगे।
भारी जल बोर्ड , एटॉमिक ऊर्जा विभाग, **मुंबई के अध्यक्ष ए एन वर्मा** ने मुख्य अतिथि के तौर पर कहा की अगर जीवन संतुलित नहीं है तो बेकार है। हम सभी जीवन की तुलना में अपने कार्य को ९५ प्रतिसत वरीयता देते हैं। और जीवन को मात्र ५ प्रतिसत। इसका उल्टा करना होगा। जीवन को योग्य बनाने के लिए ९५ प्रतिसत प्राथमिकता देनी होगी। आपने होमी जहांगीर भाभा के हवाले से कहा की वे वैज्ञानिक आध्यात्म की वकालत करते थे। उनका कहना था की उत्तरदायित्व वहन करना और सकारात्मक बने रहना आध्यात्मिकता का परिणाम है। वैज्ञानिकों के लिए भी यह जरूरी है। उन्हें भी आत्मा को जानना चाहिए और उससे जुड़ना चाहिए। आध्यात्मिक होकर ही वे अपने कार्य और जीवन को सनतुलन में ला पाएंगे।

रजत हांडा , महा प्रबंधक , मारुती उद्योग ,गुरुग्राम ने अतिरिक्त मुख्य अतिथि के रूप में कहा की कार्य के दबाव की वजह से उनका घरेलू जीवन काफी अस्त व्यस्त था। घर में वे अशांति का कारण बने हुए थे। मगर एक कार्यकारी महिला और गृहणी होते हुए भी उनकी पत्नी का जीवन शांत और प्रसन्न था। हांडा साहब ने उनसे इसका राज पूछा। पत्नी ने बताया की वह राजयोग का अभ्यास करती है जिसका ज्ञान उनको ब्रह्मा कुमरी आश्रम से प्राप्त हुआ है। रजत हांडा ने भी राजयोग सीखा और अभ्यास किया। आज कार्य की अधिकता के बावजूद भी वे अपने जीवन को संतुलित बना सके हैं।

वैज्ञानिक और अभियंता प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक **ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल** ने सम्मलेन की विषय वस्तु पर प्रकाश डाला और बताया की यह सभी अनिवार्य है जीवन के लिए।

वैज्ञानिक और अभियंता प्रभाग के कार्यकारी सदस्य **बी के भारत भूषण** ने जीवन और कार्य के बीच संतुलन लाने के लिए सन्तुष्टता ,आत्म बोध ,त्याग ,सादगी और मिठास नामक मूल्यों को आत्मसात करने की सलाह दी।

वैज्ञानिक और अभियंता प्रभाग के मुख्यालय संयोजक **बी के भरत** ने आये हुए डेलीगेट्स का स्वागत किया। **बी के पीयूष** ने सम्मलेन की सफलता की कामना करने वाले **डॉक्टर हर्षवर्धन** , केंद्रीय तकनीकी शिक्षा मंत्री , **राजयोगिनी सरला दीदी** ,वैज्ञानिक और अभियंता प्रभाग की अध्यक्षा ,**उत्पल वोरा** -अखिल भारतीय तेल बोर्ड के अध्यक्ष तथा **अभय सिन्हा** का सन्देश पढ़ कर सुनाया।

इसेक पूर्व संस्थान की **मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी** जी तथा संस्थान के **महासचिव राजयोगी निर्वैर** जी ने सभा को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग माधयम द्वार सम्बोधित किया और सभी का मार्ग दर्शन किया।

बी के सुरेश गुप्ता ने धयवाद ज्ञापन किया और **बी के माधुरी** ने कार्य क्रम का सञ्चालन किया। (रपट :**बी के गिरीश** , मीडिया ,ज्ञान सरोवर)